INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

Volume 3, Issue 10, October 2015 ISSN: 2320-2882 (Online)

ORIGINAL ARTICLE

Impact Factor: 0.345(GIF)

www.ijcrt.net

नैनीताल क्षेत्र में प्रवासित नेपाली भारवाहकों की कार्य दशाएं एवं समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. तृप्ति मांझी

अतिथि व्याख्याता

जनजातीय अध्ययन विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

आलेख सार:

भारवाहकों पर नेपाल में दुरूह पर्यावरण, आर्थिक कठिनाइयां, गरीबी, रोजगार के अवसरो की कमी एवं विभिन्न सुविधाओं के अभाव जैसी स्थितियां रोजगार एवं आजीविका की खोज में भारत आने के लिए दबाब डालती है। अपर्याप्त शैक्षणिक स्थिति एवं कार्यकुशलता की कमी इन्हें मजूदरी, निर्माण कार्य, चौकीदारी, भारवाहक के कार्यों को करने के लिए विवश करती है। भारत ने सदैव से "वसुधैव–कुटुम्बकम्" की नीति को अपनाया है। एक विशाल अर्थव्यवस्था एवं आजीविका की अपार संभावनाओं ने सदैव से ही नेपाली सीमांत कृषक परिवारों को आकर्षित किया है।

भारत सदैव से ही नेपाल के मध्यपर्वतीय क्षेत्र के सीमांत परिवारों के जीविकोपार्जन के लिए शरणस्थल रहा है। भारत की विशाल अर्थव्यवस्था में इन नेपाली प्रवासितों के लिए अपार संभावनाएं है। नेपाल की सीमाओ से सटे एवं अत्यधिक समीपवर्ती राष्ट्र होने तथा राजनैतिक दशाओं के कारण भारत में प्रवास अत्यधिक सहज रहा है।

शर्मा (2007)[1] के अनुसार नेपाल के पर्वतीय दुर्गम क्षेत्रों में जीवन यापन की कठिनाइयों एवं आर्थिक तंगी के चलते नेपाल के युवाओं का भारत में प्रवास अत्यधिक

मात्रा में होता रहा है। विश्व के मानचित्र में नेपाल एक अत्यंत निर्धन राष्ट्र है और अल्पविकसित देशों में से एक है। विगत दशकों से राजनैतिक एवं संवैधानिक उथल–पुथल का प्रभाव भी नेपाल की अर्थव्यवस्था पर पड़ा है।''

भारत नेपाल का सबसे निकटतम पड़ोसी राष्ट्र है एवं भारत ने सदैव से "वसुधैव–कुटुम्बकम्" की नीति को अपनाया है। एक विशाल अर्थव्यवस्था एवं आजीविका की अपार संभावनाओं ने सदैव से ही नेपाली सीमांत कृषक परिवारों को आकर्षित किया है। नेपाल से भारत में प्रवास का इतिहास पुराना है। भारत के उत्तर दिशा का सबसे निकट पड़ोसी राष्ट्र नेपाल का भौगोलिक क्षेत्र मूल रूप से विभेदीकृत करने लायक नहीं है। पूर्ण रूप से खुली एवं लंबी सीमाएं तथा सांस्कृतिक समानता के कारण दोनों राष्ट्र के लोगों का प्रवाह प्राचीन काल से देखा गया है। वास्तविकता यह है कि दोनों राष्ट्रों के आचार, विचारों, रंग, रहन–सहन में भिन्नता प्रशासनिक आधार पर की जा सकती है, अन्यथा इनमें भेद संभव नहीं है।

बाल्की, पायर्स, केमेरान, जान एण्ड सेडन, एवं डेविड (2002)[2] ने स्पष्ट किया है, कि ''इन दोनों देशों के मध्य खुली सीमाओं के संबंध में 1950 में एक अनोखी संधि हुई। नेपाल लगभग 1751 कि.मी. सीमा को भारत के साथ सांझा करता है, जिससे दोनों ही देशों के लोग एक–दूसरे देश के किसी भी प्रदेश या क्षेत्र में किसी भी समय आना–जाना कर सकते है। इन दोनों ही देशों की सीमाओं का निर्धारण अत्यधिक पुराना एवं स्वतः ही हुआ है। भारत नेपाल के मध्य "शांति एवं मित्रता संधि 1950'' ने औपचारिक रूप से दोनों देशों के नागरिकों को समान रोजगार के अधिकार एवं बिना बाधा के सीमाओं को लांघने की छूट प्रदान की है।''

थीयम (2006)[3] के अनुसार "कठिन आर्थिक दशाओं ने नेपाल के मध्य पर्वतीय क्षेत्र के परिवारों के लिए सबसे समीपवर्ती पड़ोसी देश भारत की तुलनात्मक रूप से व्यापक अर्थव्यवस्था बड़ी सहायक रही है। साथ ही नेपाली प्रवासियों एंव उनके परिवारों के लिए सुविधाओं एंव जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति की दृष्टि से प्रवास के प्रवाह को कारण माना जा सकता है।"

ब्रूजेल एवं ट्रिस्टेन (2007)[4], फाफ–जारनेका एवं जोआना (1995)[5] मानते है "भारत में नेपाल की पश्चिमी पहाड़ियों के गरीब परिवारों का प्रवास एक सामान्य प्रघटना रही है। इनका प्रवजन व्यवहार मुख्य रूप से युवावस्था से शुरू होता है तथा उनकी वृद्धावस्था तक अनवरत रूप से चलता रहता है।"

भट्टारई (2007)[6] के अनुसार "नेपाल की जनगणना 1991 के अनुसार कुल प्रवासित नेपालियों में लगभग 89.2 प्रतिशत प्रवासी भारत में है। अधिकांश नेपाली जिनके पास अच्छे स्त्रोत है तथा जो कुशल एवं शिक्षित है वे मुख्य रूप से यूरोप, अमेरिका एवं पूर्व एशिया के देशों में प्रवास करते है अपेक्षित रूप से जो अशिक्षित एवं अकुशल है वे दक्षिण एशिया के देशों मलेशिया एवं मध्यपूर्वी देशों में प्रवास करते है। इसके अलावा भी शिक्षित हो या अशिक्षित, कुशल या अकुशल प्रथम वरीयता भारत में प्रवास करने की ही रही है जो लगभग प्रवासितों का 80 प्रतिशत है।"

अधिकारी एंव गुरूंग (2009)[7] मानते है कि ''भारत एवं नेपाल के मध्य प्रवास का अध्ययन अत्यधिक कठिन होने के कारण इन दोनों देशों का इतिहास, प्रवास की

भिन्नता एवं विचित्रता, नेपाल से दस्तावेज एवं पंजीयन के बिना भारत पहुँचने की सुगमता, खुली सीमाएं एवं सांस्कृतिक साम्यता आदि रहे है। सांस्कृतिक साम्यता से भारत और नेपाल के नागरिकों के मध्य भेद नहीं किया जा सकता है।''

रेग्मी (1978)[8] मानती है कि ''नेपाल से भारत की सीमाओं में प्रवास की शुरूआत 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में तब शुरू हुई जब पहाड़ी क्षेत्रों में शासकीय एवं कृषि नीतियों में परिवर्तन के फलस्वरूप उन्हें अपनी भूमि छोड़कर अन्य जगह अपनी आजीविका की तलाश में जाने के लिए विवश होना पड़ा है।''

भट्ट (2012)[9] ''नेपाल के प्रवासी भारत में अधिक संख्या में आते है, अधिकांशतः ये प्रवासी अशिक्षित एवं अकुशल होते हैं। जिससे उन्हें अधिकांशतः मजदूरी, सुरक्षा, बोझा ढोने, होटलों में सेवा देने संबंधी असंगठित कार्य क्षेत्रों में संलग्न होना पड़ता है। इन स्थितियों में इन्हें अनेक कठिनाइयों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ता है।''

वर्तमान अध्ययन नैनीताल क्षेत्र में प्रवासित नेपाली भारवाहकों की कार्यदशाओं एंव समस्याओं को विवेचित करना है तथा उन कारकों को जानना है जो इनके प्रवास के प्रेरक के रूप में क्रियाशील है। साथ ही इनकी जीवन दशाओं, व्यवहारों, परिवार–विलगता से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करना जो इनके प्रवासित होने की स्थिति में उत्पन्न होती हैं।

अध्ययन के उद्देशय –

प्रस्तुत शोध प्रपत्र मुख्य रूप से निम्नलिखित उद्देश्यों पर केन्द्रित है –

1. प्रवासित नेपाली भारवाहकों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना।
2. नेपाली भारवाहकों की जीवन यापन एवं कार्य की दशाओं का अध्ययन करना।
3. नेपाली भारवाहकों के कार्य दशाओं से संबंधित समस्याओं को ज्ञात करना।

अध्ययन विधि –

श्शोध पत्र विवरणात्मक सह विश्लेषणात्मक शोध प्ररचना पर आधरित है जिसमें अवलोकन एंव मुक्त साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया गया है। अवलोकन एवं मुक्त साक्षात्कार पद्धति के अंतर्गत दैव निदर्शन विधि के आधार पर 100 पुरूष उत्तरदाताओं को उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है तथा इन 100 भारवाहक उत्तरदाताओं से साक्षात्कार कर सूचनाएं एकत्रित की गयी हैं। सूचनाओं एवं तथ्यों को एकत्रित करने के उद्देश्य से पूर्व परिक्षित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया तथा वैज्ञानिक विधियों का अनुसरण करते हुए सारणियों का निर्माण, संख्या एंव प्रतिशत में तथ्यों को प्रदर्शन, समंकों का विश्लेषण करते हुए प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र –

"नैनीताल" उत्तराखण्ड में स्थित अतिरमरणीय, नयनाभिराम पहाड़ी पर्यटन स्थल है, जो करीब 4251 स्केवे. कि.मी. क्षेत्र में फैला है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 1938 मीटर है। इस पर्यटन स्थल पर पर्यटक वर्ष भर आते हैं। साथ ही पर्यटन चक्र के कारण यहां पर्यटकों के आगमन की तीव्रता घटती बढ़ती है। जनगणना 2011 के अनुसार नैनीताल की कुल जनंसख्या 954,605 है, जिसमें लगभग 51.7 प्रतिशत पुरूष एवं 48.3 प्रतिशत महिलाएं हैं। इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 25.13 प्रतिशत है। इस क्षेत्र का लिंग अनुपात 934/1000 एवं औसत साक्षरता दर 83.88 है।

भारवाहकों का परिचय :– पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहॉ सामान ढोने हेतु भारवाहकों की प्रत्येक स्थिति में आवश्यकता होती है। इसी कारण नेपाली भारवाहकों का नैनाताल में संकेन्द्रण देखा गया है। नेपाली भारवाहक अपने वेश–भूषा, प्रस्तुती, व्यवहार के तरीकों एवं आचार विचार में अत्यधिक समानता के कारण तुरंत पहचाने जा सकते हैं।

शर्मा, जीवन आर. (2013)[10] ने विवेचित किया है कि ''अपने कंधों पर रस्सी को डाले हुए, गंदे व फटे कपड़े पहने हुए, चेहरे पर अत्यधिक थकान व दर्द को देखकर असानी से इन 'दोतयालों' को पहचाना जा सकता है।''

स्थानीय भाषा में इन्हें "राजा" या ''धोतियाल/दोतयाल'' के नाम से पुकारा जाता है। मैदानी क्षेत्र से आने वाले लोग इन्हें "बहादुर", "साथी" भी कहते हैं। ये नाम इनके प्रति समाज द्वारा दिए जाने वाले सम्मान को प्रकट करता है। साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि प्रकार्यात्मक दृष्टि से यह सामाजिक जीवन के अभिन्न अंश है।

मुक्त साक्षात्कार से ज्ञात हुआ कि नैनीताल क्षेत्र में नेपाली भारवाहकों की उपस्थिति अत्यंत पुराने काल से है। दिनों–दिन नैनीताल नगर के विकास के साथ इनकी मांग व आवश्यकता भी बढ़ी है। इस कारण इनकी संख्या में भी निरंतर वृद्धि हुई है। इनके पंजीयन की प्रक्रिया 1920 से प्रांरभ की गयी।

इन प्रवासित भारवाहकों का मूल स्थान नेपाल के उललेक, जुमला, बजुरा, सुरखेत, कालीकोट, भदरिया, भनखे तथा बजांग आदि क्षेत्र है। वर्तमान में इनकी विभिन्न कार्यों में संलग्नता के आधार पर संख्या निम्न सारणी रूप में प्रस्तुत है –

सारणी कमांक –1

कार्य संलग्नता	संख्या	प्रतिशत
भारवाहक	2.268	86.00
घरेलू कार्य	08	0.30
होटल कर्मी	21	0.80
निर्माण कार्य	216	8.19
रिक्शा चालक	45	1.70
गार्ड	27	1.03
अन्य	52	1.98
कुल	2637	100.00

उपरोक्त तालिका नेपाली प्रवासियों की नैनीताल क्षेत्र में कार्य संलग्नता प्रस्तुत करती है जिसमें सर्वाधिक 86 प्रतिशत नेपाली भारवाहक के कार्य में संलग्नित है। अधिकांश प्रवासित शिक्षा व कौशल की कमी के कारण भारवाहक कार्य में संलग्न है।

उत्तरदाताओं की व्यग्तिगत सूचना संबंधी सारणी

सारणी कमांक –2

क्र.	सूचनाएं	श्रेणी–1	श्रेणी–2	श्रेणी–3	श्रेणी–4	प्रतिशत
1	आयु	15–30 वर्ष 67:	30–40 वर्ष 13:	40–50 वर्ष 14:	50 वर्ष से ऊपर 6:	100:
2	शैक्षणिक स्थिति	शिक्षित 62:	साक्षर 14:	अशिक्षित 24:	–	100:
3	धर्म	हिन्दू 93:	बौद्ध 04:	इसाई 03:	–	100:
4	वैवाहिक स्थिति	विवाहित 52:	अविवाहित 44:	विधुर 3:	तलाकशुदा 1:	100:
5	विवाह की प्रकृति	एक विवाही 98:	बहु विवाही 02:	–	–	100:
6	विवाह के समय आयु	15 वर्ष से नीचे 20:	15–20 वर्ष के बीच 45:	20–25 वर्ष के बीच 21:	25 वर्ष से ऊपर 14:	100:
7	परिवार का स्वरूप	एकल परिवार 4:	संयुक्त परिवार 96:	–	–	100:

उपरोक्त बहुआयामी सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश 67: भारवाहक 15–30 आयु वर्ग के है इसके बाद के आयु वर्गो का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम रहा है, जो यह प्रदर्शित करता है कि इस आयु वर्ग में अन्य आयु वर्गों की तुलना से अच्छा स्वास्थ्य एवं शारीरिक क्षमता अधिक होती है। इस दृष्टि से भी इस आयु वर्ग के अधिकांश लोग भार वहन करने के कार्य हेतु उपयुक्त एवं सक्षम हैं। शैक्षणिक स्थिति संबंधी आकड़ों से प्रदर्शित होता है कि अधिकांश 62: उत्तरदाता शिक्षित हैं। साथ ही साक्षर एवं अशिक्षित उत्तरदाताओं का प्रतिशत भी कम नहीं है। इस व्यवसाय के चयन का प्रमुख कारण इनका उच्च शिक्षित एवं कुशल न होना है। धर्म के संबंध में सर्वाधिक उत्तरदाता हिन्दू धर्म के हैं, इनमें सांस्कृतिक सम्यता होने के कारण भी इस क्षेत्र में इनका संकेन्द्रण अधिक दृष्टिगोचर होता है। सर्वाधिक 52 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित हैं। इनके विवाह की प्रकृति में 98 प्रतिशत एक विवाही है, बहु विवाही उत्तरदाता का प्रतिशत अत्यधिक न्यून परंतु ध्यान देने योग्य है। विवाह के समय आयु के विवरण से स्पष्ट होता है, कि कम आयु में विवाह इनमें प्रचलित है जो 15 वर्ष से नीचे आयु समूह एवं 15–20 वर्ष के बीच के आयु समूह के सर्वाधिक प्रतिशतों से स्पष्टतः परिलक्षित होता है। इसी प्रकार संयुक्त परिवार का स्वरूप 96 प्रतिशत

सर्वाधिक है, जो इनमें एक से अधिक पीढ़ी के एक साथ रहने का द्योतक है और संयुक्त परिवार के प्रचलन का कारण इनके परिवार से दूर रहने की स्थिति में परिवार के सभी सदस्य साथ में रहते हुए एक दूसरे की देखभाल करते हैं।

नेपाली भारवाहकों को अपने कार्य स्थल पर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें प्रमुख रूप से गंदे रहवास, अस्वास्थ्यकर वातावरण, स्वच्छ जल एवं स्वच्छ शौचालय का अभाव, स्वास्थ्य सुविधाओं का प्राप्त न कर पाना जैसी अनेक समस्याएं है जिनका विवरण निम्नांकित सारणी रूप में प्रस्तुत है –

समस्या संबंधी विवरण

सारणी कमांक –1

क्र.	सूचनाएं	श्रेणी–1	श्रेणी–2	श्रेणी–3	श्रेणी–4	प्रतिशत
1	नैनीताल में प्रवास की अवधि	05 वर्ष से कम 16ः	06–10 वर्ष के बीच 62ः	11–15 वर्ष के बीच 10ः	16 वर्ष से अधिक 12ः	100ः
2	आवास में अन्य लोगों के साथ रहने की स्थिति	5 से कम साथी 18ः	6–10 साथी 52ः	11–15 साथी 23ः	16 से अधिक साथी 7ः	100ः
3	आवास में सुविधाओं की उपलब्धता संबंधी अभिमत	स्वच्छ जल हाँ 97ः नहीं 03ः	बिजली हाँ 92ः नहीं 08ः	स्वच्छ शौचालय हाँ 14ः नहीं 86ः	स्वच्छ आवास हाँ 20ः नहीं 80ः	प्रत्येक श्रेणी 100ः
4	स्वास्थ्य सुविधा प्राप्त करने के स्त्रोत संबंधी जानकारी	शासकीय अस्पताल 63ः	निजी अस्पताल 10ः	दवा दुकानदार 20ः	घरेलु उपचार 07ः	100ः

उपरोक्त बहु आयामी सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 62 प्रतिशत नेपाली भारवाहक नैनीताल क्षेत्र में 6–10 वर्षों से निवास कर रहे है। सबसे लम्बी 16 वर्ष से अधिक 12 प्रतिशत भी ध्यान देने की स्थिति में है। जो यह प्रदर्शित करता है कि भारवाहक अपने परिवार से दूर बहुत लंबी अवधि तक रहे है। वे इन लंबी अवधियों में बहुत कम अवसरों पर ही अपने परिवार से मिलने जा पाते है। यह स्थिति उनमें पारिवारिक विलंगता को प्रकट करती है। सर्वाधिक 52 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित है एवं इनके बच्चे भी है। अधिक अवधि तक परिवार से दूर रहने पर ये परिवार की विभिन्न समस्याओं, उत्सवों, जीवन चक्र के संस्कारों, बच्चों के पालन–पोषण एवं उनकी देखभाल, माता–पिता की सेवा आदि अनेक कार्यों व उत्तरदायित्वों को निभा नहीं पाते जिनका इन्हें अत्यधिक क्षोभ रहता है। साथ ही जीवन साथी से इनकी दूरी, यौन संबंधों का ना होना, प्रेम, स्नेह, देखभाल की कमी कुंठा ;।दगपमजलद्ध एवं चाहत ;।उइपजपवदद्ध की कमी को जन्म देती है।

एक ही आवास को बहुत से लोगों के साथ साझा करने के विभिन्न श्रेणियों के प्रतिशतों से ज्ञात होता है, कि ये भारवाहक बहुत से लोगों के साथ एक ही निवास में

रहते हैं। यह निवास स्थान प्रायः एक ही कमरे का होता है जिसमें रोशनी एंव स्वच्छ हवा की कमी होती है। एक ही साथ सोते है। बिस्तर की साफ सफाई पर ध्यान नहीं दिया जाता है। ये स्थितियां पूर्णतः अस्वच्छता को दर्शाती हैं, जो इनमें विभिन्न रोगों के उत्पन्न होने का कारण बनती हैं।

इनके आवास में उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में अभिमत से ज्ञात होता है, कि इनके पास स्वच्छ आवास एवं स्वच्छ शौचालय का अभाव है। अनेक लोगों के एक साथ एक ही कमरे में रहने से स्वच्छता की स्थिति न के बराबर होती है। साथ ही लगभग 86 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना है कि अधिक लोगों का एक ही शौचालय के प्रयोग से शौचालय की स्वच्छता नहीं रहती है जिससे इनमें रोगों के होने की संभावना अधिक है।

अस्वस्थ्य होने कि स्थिति में चिकित्सकीय सुविधाओं को प्राप्त करने के स्त्रोत के संबंध में जानकारी से ज्ञात होता है कि अधिकांश 63 प्रतिशत उत्तरदाता शासकीय चिकित्सालय में अपना उपचार सामान्यतः गंभीर रोगों की स्थिति में ही करवाते हैं। अन्य दवा दूकानदारों व स्वयं घरेलू उपायों से उपचार करते हैं। उपरोक्त सारणी के विवेचन से स्पष्ट है कि इन भार वाहकों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। ये अपनी आय का बहुत कम ही भाग अपनी आवशयकताओं की पूर्ति के लिए करते हैं एवं अधिकांश भाग अपने घर भेज देते हैं। पैसों की कमी व अस्वच्छता की स्थिति इनके स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है।

आरेख–1

मासिक आय संबंधी विवरण

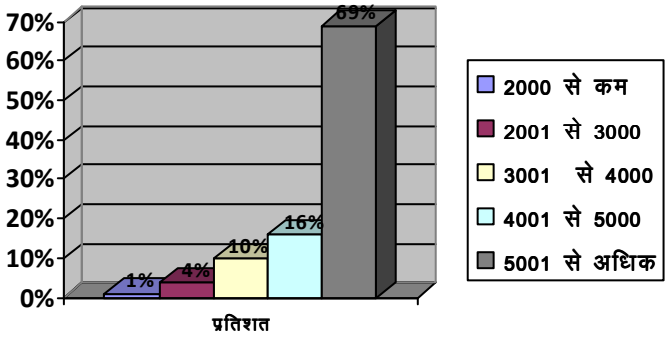

आरेख–2

कार्य संतुष्टि संबंधी अभिमत

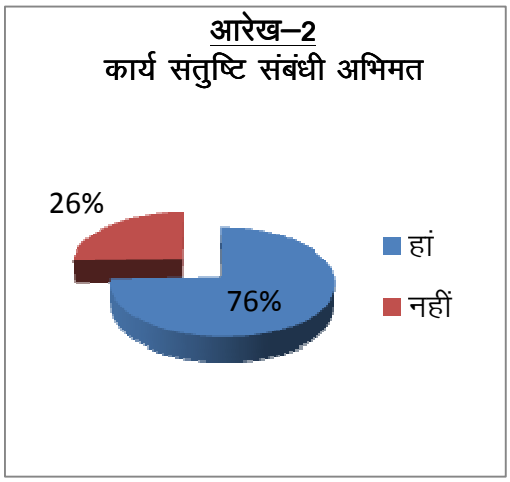

उपरोक्त आरेखों से स्पष्ट है कि अधिकांश 69ः भारवाहकों की 5001 रु. से अधिक आय है, इसके अतिरिक्त लगभग 31ः उत्तरदाता 5001 रु. से कम कमाते हैं। इस आय का अधिकांश भाग वे अपने परिवार को भेज देते हैं और बहुत कम भाग ही स्वंय के लिए खर्च करते है जो इनकी अत्यधिक दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

कम आय अर्जित करने के बाद ही अधिकांश 74: उत्तरदाता अपने कार्य से संतुष्ट है। यह संतुष्टि स्वयं को अन्य कार्यों के लिए अकुशल एवं कमजोर शैक्षणिक स्थिति होने व कार्य क्षेत्र का असंगठित स्वरूप होने के कारण है। वे अन्य कार्यों के लिए स्वयं को उपयुक्त नहीं पाते व असहज महसूस करते है। चूंकि इस कार्य में अत्यधिक मेहनत और बल की आवश्यकता होती है फिर भी ये इस कार्य को अत्यधिक सुगमता एवं सहजता से करते है।

इसके अतिरिक्त अधिकांश 75: उत्तरदाता शराब का सेवन तथा लगभग 67: उत्तरदाता तम्बाकू चबाते या धूमपान करते हैं।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन के विश्लेषण एंव विवेचन से स्पष्ट है कि इन भारवाहकों पर नेपाल में दुरूह पर्यावरण, आर्थिक कठिनाइयां, गरीबी, रोजगार के अवसरो की कमी एवं विभिन्न सुविधाओं के अभाव जैसी स्थितियां रोजगार एवं आजीविका की खोज में भारत आने के लिए दबाब डालती है। अपर्याप्त शैक्षणिक स्थिति एवं कार्यकुशलता की कमी इन्हें मजूदरी, निर्माण कार्य, चौकीदारी, भारवाहक के कार्यों को करने के लिए विवश करती है। नैनीताल क्षेत्र पहाड़ी पर्यटन स्थल होने से यहां अकुशल एवं असंगठित कार्यों की उपलब्धता/अवसर अधिक है, साथ ही नेपाल का सीमावर्ती क्षेत्र होने से यहां नेपाली प्रवासियों की संख्या का संकेन्द्रण देखा जा सकता है।

असंगठित क्षेत्रों में कार्य करने के कारण अनेक सुविधाओं से प्रायः ये वंचित रहते हैं। कार्यक्षेत्र में अनेक समस्याओं एवं अस्वास्थ्यकर स्थितियों का सामना करते हैं। इन सभी दशाओं एवं कम आय अर्जित करने के फलस्वरूप भी इनमें अपनी कार्य की संतुष्टि अधिक है। अतः विभिन्न कठिनाइयों एवं समस्याओं को झेलते हुए भी देश की सीमाओं से परे इनका भारत की सामाजिक संरचना एंव सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ सामंजस्य एवं समायोजन प्रवास की समाजशास्त्रीय अवधारणा को पृथक दृष्टिकोण से विवेचित करने को बाध्य करता है।

वर्तमान अध्ययन से स्पष्ट है कि ये नेपाली भारवाहक विभिन्न सुविधाओं, शासन–प्रशासन की योजनााओं एवं प्राथमिक व अनिवार्य आवश्यकताओं से सदैव वंचित रहते हुए स्वयं को इन नवीन परिस्थिति में अपरिचित सा महसूस करते हैं। स्थानीय जन इन्हें श्रम की आवश्यकता के कारण भी स्वयं से अलग नहीं कर सकते फिर भी ये स्थानीय जनता से अत्यधिक धुले–मिले जान नहीं पड़ते है। इनकी पिछड़ी संस्कृति के साथ नैनीताल की नवीन आधुनिक एवं उन्नत संस्कृति के बीच की खाई इनके सामांजस्य एवं समायोजन में कठिनाइयां उत्पन्न करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. *शर्मा, जीवन आर. (2007), मोबिलिटी, पेथेलॉजी एण्ड लाइवलीहुड : एन इथनोग्राफी ऑफ फॉर्मस् ऑफ मोबिलिटि इन/फ्रॉम नेपाल, पी–एच. डी. थीसिस (अप्रकाशित), युनिवर्सिटी ऑफ इडनबर्ग।*
2. *बाल्की, पायर्स एम., केमेरॉन, जॉन एण्ड सेडन एवं डेविड (2002), अण्डरस्टेन्डिंग 20 इयर्स ऑफ चेन्ज इन वेस्टर्न–सेन्ट्रल नेपाल : कन्टीन्युटी एण्ड चेन्ज इन लाइव्स एण्ड आइडियास; वर्ल्ड डेवेलपमेन्ट 30(7)।*
3. *थीयेम, सुजेन (2006), सोशियल नेटवर्क एण्ड माइग्रेशन : फॉर वेस्ट नेपालीस् लेबर माइग्रेन्ट इन दिल्ली, मन्सटर, एल. आई. टी. पब्लिशिंग हाउस।*
4. *ब्रूजेल, ट्रिस्टन (2007), द बर्ल्ड अपसाइड डाउन : नेपालीस माइग्रेन्ट इन नार्दन इण्डिया, यूरोपियन बुलेटिन ऑफ हिमालयन रिसर्च 31 ।*
5. *फाफ – जरनेका, जोआना (1995), माइग्रेशन अण्डर मार्जिनेलिटी कंडिशंस : दी केस ऑफ बजांग; इन आइ. एन. एफ. आर. ए. एस., इण्टर डिसिप्लीनरी कंसल्टिंग ग्रुप फार नेचुरल रिसोर्स एण्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर मेनेजमेंट एण्ड आई. डी. ए. (संपादित), रुरल–अर्बन इन्टरलिंकेज : ए चेलेन्ज फॉर स्विस डेवेलपमेन्ट कॉआपरेशन, ज्युरिक, काठमाण्डू।*
6. *अधिकारी, जगन्नाथ एवं गुरुंग, गनेश (2009), माइग्रेशन बिटवीन नेपाल एण्ड इण्डिया : सिक्यूरिटी एण्ड लाइवलीहुड कंसर्न, नेपाल इंस्टीट्यूट ऑफ डेवेलपमेन्ट स्टडीज्, काठमांडू, नेपाल।*
7. *भट्टाराई, राजू (2007), ओपन बार्डर क्लोज रिलेशनशिप, नेपाली लेबर माइग्रेन्ट इन देल्ही, इन्स्टीट्यूट ऑफ सॉशियल स्टडीज्, नीदरलैण्ड।*
8. *रेग्मी, महेश सी. (1978), थैट्च हट्स एण्ड स्टूको पैलेसेस : पीजेन्ट एण्ड लैण्डलार्ड्स इन दी 19$^{जी}$ सेन्चुरी नेपाल, विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
9. *भट्ट, कृष्णाराज (2012), नेपाली वर्कर्स इन अनऑर्गेनाइज्ड सेन्टर ऑफ उत्तराखण्ड स्टेट : ए सोशियोलॉजिकल एनालिसिस, शोध प्रबंध (अप्रकाशित), कुमांयु विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड।*
10. *शर्मा, जीवन आर. (2007), मार्जिनल बट मौडर्न, यंग नेपाली लेबर माइग्रेन्ट इन इण्डिया, शोध पत्र, नॉर्डिक जर्नल ऑफ यूथ रिसर्च, वाल्युम 21, नं. –4।*
11. *मांझी, तृप्ति (2002), नैनीताल क्षेत्र में प्रवासित नेपाली भारवाहकों के परिवार एवं परिवार की दशाएं, क्षेत्र निरीक्षण प्रतिवेदन, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)।*